



अभिलेखों के परिप्रेक्ष्य में शंख लिपि का स्वरूप: एक संक्षिप्त अध्ययन

देवेन्द्र कुमार, पीएच-डी एवं पी डी एफ, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Author

देवेन्द्र कुमार, पीएच-डी

E-mail : dr.kumardevendra@bhu.ac.in

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/07/2026
Revised on : 13/09/2026
Accepted on : 23/09/2026
Overall Similarity : 01% on 15/09/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Sep 15, 2026 (10:32 AM)
Matches: 0 / 3177 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

शंख लिपि प्राचीन भारत से प्राप्त होने वाले अभिलेखों की एक अपठित अलंकृत लिपि है, जो मुख्यतः चौथी से आठवीं शती के मध्य व्यापक रूप से प्रचलन में रही। इस लिपि का नामकरण इसके अक्षरों की शंख जैसी आकृति के कारण हुआ है। यह लिपि अभी तक उद्घाटित नहीं जा सकी है, परन्तु इसके अभिलेख भारत के विभिन्न भागों विशेषकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार सहित दक्षिण भारत से प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शंख लिपि के स्वरूप आकार-प्रकार और अभिलेखीय महत्व की विवेचना की गई है।

मुख्य शब्द

अभिलेख, लेखन, शंख लिपि, ब्राह्मी लिपि, अलंकरण.

परिचय

भारतीय उपमहाद्वीप में शंख लिपि के अधिकांश अभिलेख प्रस्तर-खण्डों गुहाओं, निर्मित भित्तियों, स्तम्भों, पट्टों, सोपानों, प्रतिमाओं तथा मुहरों इत्यादि पर अंकित प्राप्त होते हैं।¹ कुछ अभिलेखों में वर्ण बड़े रूप में उत्कीर्ण हैं, कहीं-कहीं इनका आकार काफी बड़ा है।² भारत में इसका विस्तार उत्तर में जम्मू काश्मीर के अखनूर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक के सन्दूर तक तथा पूर्व में पश्चिम बंगाल के सुसुनियाँ से लेकर पश्चिम में गुजरात के जूनागढ़ तक हैं। इस लिपि की विशिष्टता इसकी कलात्मक अलंकरणयुक्त लिखावट है। डॉ. सोलोमन के अनुसार शंख लिपि विविधतापूर्ण है, उसमें तीन मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:

1. अक्षरों के साथ अलंकरण को प्रमुखता से व्यक्त करना;
2. अभिलेखों के लिखावट में अत्यन्त सावधानी का होना;
3. अक्षरों के आकार-प्रकार की विशिष्टता मुख्य है।³

ऐसा प्रतीत होता है कि शंख लिपि मूल रूप से ब्राह्मी वर्णमाला से उद्भूत हुई थी तथा उसी के अनुरूप वह बाँये से दाहिने की ओर लिखी जाती थी।⁴ यद्यपि ब्राह्मी अक्षरों से शंख लिपि के अक्षर हर बार समानता नहीं रखते थे, कभी-कभी उनका आकार अत्यधिक अलंकृत अथवा कौतुहलपूर्ण भी होता

था। शंख लिपि घसीट शैली में लिखी जाती थी। अधिकांशतः एक शब्द के वर्णों को रेखाएँ आपस में जोड़ती है। इस घसीट शैली के परिणामस्वरूप अक्षर दाहिनी ओर झुकाव लिए हुए हैं और कभी-कभी इनका झुकाव बाँयी ओर भी दिखाई देता है।⁹ कभी-कभी अक्षरों को उनके स्वाभाविक खड़ी मुद्रा से 60 डिग्री से 90 डिग्री दाहिनी ओर झुकाकर लिखा गया है। अगर किसी अभिलेख की सम्पूर्ण पंक्ति के समस्त अक्षरों को उनकी स्वाभाविक खड़ी मुद्रा से 45 डिग्री दाहिनी ओर झुकाकर लिखा जायेगा तो वह अभिलेख शंख लिपि का है, किन्तु इस लिपि की जानकारी न रखने वालों को क्षैतिज या पड़ी अवस्था में दिखाई देगी, वहीं नये या कम जानकार लोगों के लिए इस प्रकार का अभिलेख ऊपर से नीचे शैर्षिक रूप में लिखा प्रतीत होगा।¹⁰ कभी-कभी अक्षरों को एक गोलाकार अथवा अलंकृत नमूने (आकार) के भीतर लिखा गया है।¹¹ शंख लिपि के विभिन्न अभिलेखों में ब्राह्मी के सामान्य अक्षरों को विभिन्न प्रकार के अलंकरण से मुक्त अंकित किया गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक ही काल खण्ड और एक ही क्षेत्र से प्राप्त शंख लिपि के अभिलेखों की अलंकरण प्रवृत्ति भिन्न हो सकती है। शंख लिपि की मात्राओं तथा स्वरों को प्रायः खींचकर अंकित किया जाता था, जिसके कारण उनमें अलंकरण उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी स्वरों के चिन्हों को अतिरिक्त रेखाओं के साथ अंकित किया जाता है,⁸ जिनका उद्देश्य मात्र 'सुन्दरता बढ़ाना होता है।

शंख लिपि के अधिकांश अभिलेख लघु आकार में हैं, जिनमें से अधिक अक्षर नहीं हैं। इनमें पश्चिम बंगाल के बाँकुडा जिले के सुसनियाँ से प्राप्त अभिलेख अपवाद है, जिसमें 15 अक्षर हैं। इन अभिलेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि संस्कृत उन भाषाओं में एक थी, जिनमें शंख लिपि के अभिलेख लिखे गये।¹² इसके अतिरिक्त प्राकृत तथा मिश्रित भाषा का भी प्रयोग देखने को मिलता है।¹⁰ जिसका एक उदाहरण मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त प्रस्तर के पटिया पर उत्कीर्ण शंख लिपि का अभिलेख है। इन अभिलेखों की शैलीगत प्रकृति से इन्हें पूर्व गुप्त काल में रखा जा सकता है।¹¹ शंख लिपि के अश्व प्रतिमा अभिलेख तथा देवगढ़ मंदिर के स्तम्भ अभिलेख यह इंगित करते हैं कि शंख लिपि के अभिलेख में नाम अथवा शीर्षक का ही अंकन किया जाता था।¹² प्रस्तर अश्व अभिलेख जिसमें 'श्री महेन्द्रदित्य' जो गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम का विरुद्ध था, जिसने अश्वमेध यज्ञ करवाया था, से स्पष्ट होता है कि यह प्रस्तर अश्व, अश्वमेध यज्ञ के अश्व का प्रतीक है। वहीं देवगढ़ मंदिर के स्तम्भ अभिलेख में 'श्री गोविन्द' के नाम का अंकन है।

शंख लिपि में टंकित अभिलेख हमें राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों से अवगत कराते हैं। यह ज्ञात नहीं है कि लघु अभिलेख लिखना किस धार्मिक परम्परा के अन्तर्गत आता था। इन अभिलेखों का उद्घाटन कठिन करने के पीछे क्या मंशा थी यह अभी तक ज्ञात नहीं है। शंख लिपि को स्तम्भ अथवा धातु पत्रों तथा स्मारक वस्तुओं पर टंकित करना, उनका तीर्थ क्षेत्रों में पाया जाना, तथा उनमें देवी-देवताओं का नाम अंकित होना, यह संकेत करता है कि इन अभिलेखों का कोई धार्मिक महत्व रहा होगा।

अभिलेखों को रहस्यमयी शैली में उत्कीर्ण कराने से उस वस्तु की, जिस पर अभिलेख अंकित है, उसकी पवित्रता बढ़ जाती रही होगी तथा सामान्य जन को इस लिपि में बिना जाने उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाती रही होगी। इस दृष्टि से देखा जाय तो शंख लिपि ब्राह्मी लिपि की ही पुरोहितों द्वारा प्रयुक्त संस्करण है।

शंख लिपि लेखन कला की अत्यन्त अलंकृत तथा दर्शनीय अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। उत्तर काशी अभिलेख को छोड़ दिया जाये तो शंख लिपि के अब तक प्राप्त अभिलेख प्रस्तर पर विभिन्न रूपों में अंकित हैं। ऐसा स्तम्भ अभिलेख व बिहार शरीफ अभिलेख, प्रस्तर स्तम्भ पर उत्कीर्ण हैं। राजिम अभिलेख व कनवर अभिलेख प्रस्तर बड़ेरी, तथा खण्डगिरि और चुनार अभिलेख गुहा अभिलेख हैं। तिगवा अभिलेख निर्मित भित्ति पर अंकित है। खीरी और शालिहुण्डम् अभिलेख सोपानों पर उत्कीर्ण है। खैरीगढ़ अभिलेख मूर्ति पर तथा राजगीर व मनसर अभिलेख स्वतन्त्र रूप से प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण हैं।

शंख लिपि के अभिलेख बाँयी से दाहिनी ओर अथवा ऊपर से नीचे की ओर लिखे मिलते हैं। शैर्षिक शैली में शंख लिपि तभी लिखी गयी है, जब सम्पूर्ण अभिलेख उसी शैली उर्ध्वाधर में उत्कीर्ण हैं। शंख लिपि के अक्षर बाँये से दाहिनी ओर झुके हुए लिखे जाते थे, इस तथ्य की पुष्टि देववरनार्क अभिलेख से होती है। यह अभिलेख अष्टकोणीय स्तम्भ पर अंकित है। उस पर बाँये से दाहिनी तरफ की ओर अक्षरों का अंकन प्रारम्भ हुआ है। पाँच अक्षरों के इस अभिलेख का पाँचवाँ अक्षर वापस पहले अक्षर के नीचे आ गया है।¹³

बड़ेरियों और स्तम्भों पर अंकित शंख लिपि के अभिलेख ऊपर से नीचे की ओर लिखे गये हैं।¹⁴ इस प्रकार के अभिलेख राजौना (सं. 3 से छोड़कर) राजिम (सं. 4 को छोड़कर) वैशाली (सं. 3-5) एरण (सं. 5-6 के अतिरिक्त) भरहुत, कलकत्ता (सं. -1) लौरिया अरराज (सं. 1-2) बिहार शरीफ, तिगवा (सं. 1) साँची (सं. 2) में दिखाई देते हैं। ये सभी अभिलेख ऊपर से नीचे की तरफ अंकित किये गये हैं। इनमें प्रत्येक अक्षर औंधे मुँह इस प्रकार लिखा गया है कि वे सभी एक दूसरे के नीचे आ जाय।

वहीं क्षैतिजाकार लेखन अत्यन्त असमान्य 90 डिग्री झुकाकर लिखे गये हैं। भारतीय अभिलेख शास्त्र में यह नया नहीं है। इस प्रकार की लेखन शैली कलात्मकता के उद्दीपन की वृद्धि दिखाई पड़ती है। कभी-कभी अथवा अधिकांश स्थलों पर शंख लिपि के अतिरिक्त अलंकरण के फलस्वरूप उन्हें लिपि मानने में सन्देह उत्पन्न हो जाती है और कभी-कभी उन्हें केवल अलंकरण समझ लिया जाता है। यही कारण है कि जेम्स प्रिंसेस ने जब शंख लिपि के अभिलेख को खोजा तो वे इसकी लिपि होने पर शंका व्यक्त की थी। इस प्रकार के अतिरिक्त अलंकरण के उदाहरण हमें एरण (सं. 1) लौरिया अरराज (सं. 1-2) व अन्य अभिलेखन में दिखाई देते हैं।¹⁵

शंख लिपि के अक्षरों के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अतिरेक अलंकृत तथा सादे अक्षरों में काफी समानता है अन्तर केवल इतना है कि अभिलेख की विशिष्टता की पृष्ठभूमि में वे अक्षर जो काफी अलंकृत हैं अपनी दिशा परिवर्तित करते हुए दिखाई देते हैं, जबकि सामान्यतया वे क्षैतिजाकार टंकित होना चाहिए था। अतः यह कहा जा सकता है कि सादे व अलंकृत अक्षरों का अन्योश्रित सम्बन्ध था।¹⁶ एक ही अक्षर विभिन्न अभिलेखों में अपनी दिशा परिवर्तित करते हुए दिखाई देते हैं। शंख लिपि के अक्षरों पर आरोपित अलंकरण पूर्णरूपेण अर्थपूर्ण नहीं होते, बल्कि अनेक ऐसी रेखाएँ अक्षरों को सौन्दर्य प्रस्तुत करने हेतु टंकित हैं। जैसा कि लौरिया अरराज (1) और एरण (5) के अभिलेखों में देखा जा सकता है।¹⁷

शंख लिपि का दूसरा महत्वपूर्ण गुण उसके अक्षरों का अत्यन्त विशाल होना है। अपने अलंकरणों समेत यह अक्षर कभी-कभी एक फुट का विशालकाय रूप धारण कर लेते हैं।¹⁸ उदयगिरि से प्राप्त शंख लिपि के अक्षरों (अभिलेख सं. 3,9 और 10) में अक्षरों का अनुपात अन्य भारतीय लिपियों की तुलना में दुर्लभ है। अधिकांशतः शंख लिपि के अभिलेखों के साथ हमें ब्राह्मी अभिलेख के भी दर्शन होते हैं, जिसे उसकी कलात्मकता के कारण अलंकृत ब्राह्मी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इस प्रकार के अलंकृत ब्राह्मी लिपि के अभिलेख हमें भारी-मात्रा में उदयगिरि शालिहुण्डम् तथा राजिम में दिखाई पड़ते हैं तथा थोड़ी कम मात्रा में राजौना, चुनार, खण्डगिरि, जूनागढ़ और खीरी में भी दृष्टिगोचर होती है जिसे शंख लिपि के लेखन में महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में देखा जा सकता है।

अलंकृत ब्राह्मी को दो प्रकार से देखा जा सकता है। इनमें 'डी' प्रकार ब्राह्मी (Boy headed) यह शैली हमें उदयगिरि अभिलेख में दिखाई देती है, जो खीरी तथा शालिहुण्डम् शंख लिपि के सदृश है।¹⁹ सीता जी अभिलेख भी इसी ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण जिसे अलंकृत दक्षिण ब्राह्मी कहा गया है।²⁰ किन्तु इस शैली के ब्राह्मी न केवल पूर्वी भारत और मध्य भारत बल्कि कश्मीर तक दिखाई देती है।²¹ दूसरे प्रकार की अलंकृत ब्राह्मी जो उत्तरी भारत तक सीमित है इसे चुनार, राजौना और राजिम अभिलेखों में देख सकते हैं। इस दूसरे प्रकार की अलंकृत ब्राह्मी की शैली जटिल कोणीय स्वरूप से युक्त तथा कम और अधिक मात्रा में अतिरिक्त अलंकरण लिए उत्कीर्ण की गयी है। राजिम अभिलेख का 'पूर्णादित्य' शब्द इस शैली का अतिरेक उदाहरण है। कनिंघम के अनुसार सातवीं-आठवीं शताब्दी ई. में इस प्रकार की अलंकृत ब्राह्मी उत्तर भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रों में प्रयोग में लायी जाती थी।²²

उपरोक्त दोनों प्रकार की अलंकृत ब्राह्मी और शंख लिपि में जो सामान्य गुण हैं, वह लम्बी तथा अधिकांशतः अधिक रेखाओं का अक्षरों के ऊपर तथा नीचे उत्कीर्णन है। यह गुण उपरोक्त तीनों प्रकार के उत्त्कन में दिखाई देता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह समानता वास्तव में सतही है, तथा यह अलंकृत ब्राह्मी व शंख लिपि के मूल को नहीं प्रमाणित करती हैं।²³ शैलीगत अध्ययन के आधार पर शंख लिपि के अभिलेखों में निम्नलिखित तीन प्रमुख भिन्नता देखने को मिलती है:

1. विभिन्न अभिलेखों के अक्षरों में अलंकरण एवं छल्लेदार रूप में एक-दूसरे से सम्बद्ध होना।
2. अभिलेखों के अंकन में बरती गई सावधानी।
3. शंख लिपि के अक्षरों के आकार-प्रकार में भिन्नता।

यद्यपि प्रत्येक शंख लिपि के अभिलेखों में अक्षरों को ऊपर तथा नीचे अलंकरण को जोड़ा गया है तथापि उन अलंकरणों में काफी मात्रा में भिन्नता भी दिखाई देती है। सामान्य रूप से अलंकृत अभिलेखों में देवगढ़ के प्रथम, लौरिया अरराज के द्वितीय तथा एरण के छठा और नवम् अभिलेखों का उल्लेख किया जा सकता है। इन अभिलेखों में अक्षरों के ऊपर तथा नीचे छोटी मुड़ी हुई रेखाओं से अलंकरण किया गया है।²⁴ मध्यम अलंकरण युक्त अभिलेखों में कनवर, लौरिया अरराज (सं. 02) और राजिम (सं. 1) का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें अक्षरों का अधिकांश भाग अलंकृत तथा भिन्नता लिये हुए हैं। तीसरे प्रकार में गोलाकार जटिल तथा लम्बी रेखाएँ अलंकरण हेतु प्रयुक्त की गयी हैं। अक्षरों के अतिरिक्त स्वतंत्र रेखाओं का उन्मुक्त प्रयोग अभिलेख की सुन्दरता बढ़ाने के लिए किया गया है। ऐसी स्वतंत्र रेखाएँ किसी अक्षर विशेष से बँधी नहीं है। इस प्रकार के अलंकृत शंख लिपि का अच्छा उदाहरण एरण (सं. 5) और बिहार शरीफ के अभिलेख (सं. 2) में दिखाई देता है।

शंख लिपि के अभिलेख कलात्मक व सावधानी पूर्वक उत्कीर्ण किये गये हैं, ये अभिलेख जहाँ एक तरफ सामान्य अलंकरण से युक्त हैं वहीं दूसरी तरफ वे उच्च कोटि की लेखन कला का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कभी-कभी यह भिन्नता एक ही स्थान से प्राप्त अभिलेखों में दिखाई पड़ती है।¹²⁵ एरण के पाँचवें तथा छठे अभिलेख में प्रदर्शित कलात्मक भिन्नता जो एक दूसरे के ऊपर नीचे उत्कीर्ण है। इनमें पाँचवाँ अभिलेख फन्देदार अलंकरण से भलीभाँति सज्जित है, जबकि दूसरे अभिलेख में लेखक ने अलंकरण पर बहुत ध्यान नहीं दिया है। लगभग इसी प्रकार का अलंकरण राजिम के प्रथम एवं तृतीय अभिलेख में दिखाई देता है।¹²⁶ जिनका प्राप्ति स्थान एक-दूसरे के निकट है। राजिम का प्रथम अभिलेख योजनाबद्ध ढंग से सुचारु रूप में अंकित है, वहीं तृतीय राजिम अभिलेख के लिखने में लापरवाही दिखाई देती है। एक अन्य उदाहरण के रूप में लौरिया अरराज के प्रथम एवं तृतीय अभिलेख का उल्लेख कर सकते हैं जो एक ही स्थल से प्राप्त है।¹²⁷

शंख लिपि के अभिलेखों का तत्व परिवर्तनशील नहीं है बल्कि विभिन्न अभिलेखों के मूल अक्षरों जिनकी ध्वनि और अर्थ एक ही हैं, के मध्य भी शैलीगत विविधता देखने को मिलती हैं। यद्यपि कुछ अभिलेखों के अक्षरों में असमान्य शैली दिखती है फिर भी यह कहना कठिन है कि कोई अक्षर विशेष शंख लिपि में सामान्य अक्षर है।¹²⁸ कहने का तात्पर्य यह है कि शंख लिपि की कोई प्रमाणिक वर्णमाला का अभाव सा दिखता है।¹²⁹ क्योंकि प्रत्येक अक्षर भिन्न रूपों में अंकित किये गये हैं तथापि लौरिया अरराज के द्वितीय तथा कनवर अभिलेख में प्रयुक्त शैली को कुछ हद तक इस लिपि की सामान्य शैली के अक्षर कह सकते हैं। शंख लिपि के अक्षरों में हर बार विरोधाभासी भिन्नता देखने को मिलती है। कभी-कभी दो अभिलेख इस तरह समानता रखते हैं कि उन्हें एक ही व्यक्ति द्वारा उत्कीर्णित माना जा सकता है। लौरिया अरराज का द्वितीय तथा भरहुत का द्वितीय अभिलेख अधिक अंशों में समानता लिये हैं। ऐसा लगता है कि इन दोनों अभिलेखों को एक ही हाथ द्वारा अंकित किया गया है।¹³⁰

शंख लिपि के लेखन स्वरूप को एक अन्य विधि से भी समझा जा सकता है जिन्हें निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। यह तीनों प्रकार शंख लिपि के उत्कीर्णित अक्षरों के अन्दरूनी भाग के गुणों पर आधारित है। इनमें अधिकांश अक्षरों के अन्दरूनी भाग को या तो उसी प्रकार छोड़ दिया जाता है, या पूरी तरह काटकर निकाल दिया जाता है, या उसको आंशिक रूप से काटकर उस पर कोई आकार उत्कीर्ण किया जाता है। उक्त प्रथम प्रकार के अभिलेखों में एरण के 6 और 9, भरहुत 3, लौरिया अरराज 3 और चुनार अभिलेख इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार के अक्षरों को सादे रेखीय में उत्कीर्ण किया जाता है। यही शैली हमें भारत की अधिकांश लिपियों में दिखाई देती है।¹³¹

शंख लिपि के द्वितीय प्रकार के लेखन में अक्षरों के अन्दरूनी भाग को काटकर हटा दिया गया है। बिहार शरीफ-2, खीरी का चौतीसवाँ अभिलेख तथा सुसुनियों के सम्पूर्ण अभिलेख इस द्वितीय प्रकार के अन्दर रखे जा सकते हैं। लेखन के तृतीय ढंग में अक्षरों के अन्दरूनी भाग को कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण किया गया है। कहीं-कहीं अन्दरूनी भाग को पूरा हटाकर उनके भीतर रेखीय, ज्यामितीय अलंकरण उत्कीर्ण है। इस प्रकार के उदाहरण में खण्डगिरि और प्रह्लादपुर के प्रथम अभिलेख को प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार का अलंकरण एरण के प्रथम अभिलेख में भी दिखाई देता है।¹³²

अब तक प्राप्त समस्त शंख लिपि के अभिलेखों में परिलक्षित बड़ी मात्रा में शैलीगत भिन्नताओं से इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि वे सभी एक ही लिपि के भिन्न उदाहरण हैं। उदाहरणार्थ एरण के प्रथम व लौरिया अरराज के तृतीय अभिलेख में थोड़ी सी समानता दिखती है, परन्तु सावधानी पूर्वक विश्लेषण एवं प्रत्येक आकार व विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इन अभिलेखों की शंख लिपियों में मूलभूत रूप से एकात्मकता का निर्देशन होता है। शंख लिपि के अक्षरों के विभिन्न आकार एवं अभिलेखों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ये प्रकट और विलोप होते रहते हैं जिनमें केवल शैलीगत भिन्नताएँ दिखाई देती हैं।¹³³

सामान्यतः किसी लिपि की शैलीगत भिन्नताओं का आधार भौगोलिक अथवा उस लिपि का क्रमिक विकास होता है परन्तु शंख लिपि में परिलक्षित भिन्नताओं के कई जटिल कारक हैं। इन अभिलेखों के तिथि निर्धारण का प्रश्न भी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि सामान्यतः उनमें अति संक्षेप में कुछ अक्षर अंकित होते हैं। एक ही पुरास्थल पर मिले विभिन्न शंख लिपि के अभिलेख में यह निर्धारित करना दुष्कर है कि उनमें कौन पहले का है और कौन परवर्ती साथ ही कभी-कभी समकालीन अभिलेख भी शैलीगत भिन्नता लिये होते हैं। यह इस लिपि के क्रमिक विकास को और भी जटिल बना देता है। यह भी संभव है कि एक ही स्मारक पर विभिन्न काल खण्डों में शंख लिपि के अभिलेख उत्कीर्ण किये गये हों। इसके विपरीत कलकत्ता पट्ट तथा राजौना स्तम्भ 'ब' अभिलेख चौथे में यह देखने को मिलता है कि लिखने वाले स्थान को बराबर-बराबर-हिस्सों में बाँटा गया है, और उनके मध्य अभिलेख उत्कटित हैं, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यह अभिलेख यद्यपि एक ही साथ उत्कीर्ण किये गये परन्तु इनके अक्षरों की शैलीगत भिन्नता संभवतः इसलिए हुई क्योंकि उन्हें भिन्न लिपिकारों ने उत्कीर्ण किया था।

शंख लिपि के अभिलेखों को किसी भौगोलिक क्षेत्र से सम्बद्ध नहीं कर सकते। समान दिखने वाले अभिलेख कभी-कभी अत्यन्त दूरी पर स्थित हैं, उदाहरण के लिए लौरिया अरराज उत्तरी बिहार में, भरहुत मध्य भारत में स्थित है।³⁴

निष्कर्ष

उपरोक्त भिन्नताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शंख लिपि अभिलेख के अक्षरों की उत्कीर्णन शैली उस अभिलेख के जारीकर्ता के व्यक्तिगत रुचि और रुझान पर निर्भर करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी काल विशेष में विभिन्न प्रकार के शंख लिपियों की शैली उपस्थित रहती थी तथा लिपिकार अथवा जारीकर्ता उन विभिन्न शैलियों में से किसी एक का चुनाव अपनी इच्छा से कर लिया करता था। वस्तुतः अपने अलंकरणिय स्वरूप के कारण यह लिपि अभी तक अपठनीय है।

सन्दर्भ सूची

1. सोलोमन, आर.; शेल इन्सक्रिप्शन्स', पृ. 45; आसपेस्ट ऑफ इण्डियन आर्ट एण्ड कल्चर, एस.के. सरस्वती कमोमेरेशन वाल्युम, (सम्पा. जे. चक्रवर्ती और डी.सी. भट्टचार्य), पृ. 2.1-2.2; *जर्नल ऑफ एपिग्राफिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया*, 198., वाल्युम 7, पृ., 6-7।
2. सोलोमन आर.; पूर्वोक्त, पृ. 46; आसपेक्ट ऑफ इण्डियन आर्ट एण्ड कल्चर, पूर्वोक्त, पृ. 2.1।
3. सोलोमन आर.; पूर्वोक्त, पृ. 46-56।
4. सोलोमन, आर.; पूर्वोक्त, पृ. 31-45।
5. मुखर्जी, बी.एन., "दि सो-काल्ड शेल स्क्रिप्ट", स्टडीज इन दि शेल स्क्रिप्ट (सम्पा., आर.के. शर्मा), पृ. 23।
6. वही, पृ. 23।
7. मुखर्जी, बी.एन.; पूर्वोक्त; पृ. 24।
8. वही, पृ. 24।
9. वही, पृ. 25, डिसाइफरमेन्ट ऑफ दि शेल स्क्रिप्ट, लखनऊ, 1983, पृ. 15 एवं आगे।
10. वही, पृ. 32 नं. 16।
11. वही; पृ. 3., इस प्रसंग में देवगढ़ के गुप्तकालीन मंदिर के प्रस्तर स्तम्भ पर ब्राह्मी के साथ शंख लिपि का अंकन महत्वपूर्ण एम.एस. वत्स, दि गुप्ता टेम्पुल ऐट देवगढ़ मेमायर्स ऑफ दि आर्कियोलॉजिक सर्वे ऑफ इण्डिया, नं. 7., पृ. 3, 28-29।
12. मुखर्जी, बी.एन., पूर्वोक्त, पृ. 27।
13. सोलोमन, आर.; शेल इन्सक्रिप्शन्स, पार्ट-1, जर्नल ऑफ एन्शिएण्ट हिस्ट्री, वाल्युम 11, 1977-78, सप्लीमेन्ट, पृ. 45।
14. वही, पृ. 45।
15. आर., सोलोमान, वही, पृ. 46।
16. वही, पृ. 46।
17. वही, पृ. 46।
18. वही, पृ. 46।
19. आर. सोलोमन, पूर्वोक्त, पृ. 47।
20. एनुअल रिपोर्ट, ऑफ इण्डियन एपिग्राफी; 1859-6., पृ. 99 नं. 515-517।
21. वही, 1962-63, पृ. 85-86, नं. 314-316, प्ले. 3।

22. अलेक्जेंडर कनिंघम; आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 3 पृ. 154।
23. सोलोमन; आर.; पूर्वोक्त, पृ. 47।
24. वही, पृ. 48।
25. सोलोमन; आर.; पूर्वोक्त, पृ. 48।
26. वही, पृ. 48।
27. वही, पृ. 48।
28. वही, पृ. 49।
29. वही, पृ. 49।
30. वही, पृ. 49।
31. वही, पृ. 49।
32. वही, पृ. 49-5।
33. वही, पृ. 5।
34. वही, पृ. 5।
